International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जैनेन्द्र कुमार की कहानियों में व्यष्टि-विमर्श

डा.गिरीश चन्द्र जोशी

एसोसिएट प्रोफेसर

श्री अरविंद महाविद्यालय(सांध्य)

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

हिंदी कथा -साहित्य के तीसरे दशक के अंत में जिस एक नई प्रतिभा ने जन्म लियाऔर मुंशी प्रेमचंदव जयशंकर प्रसाद की सृजनात्मकता और लोकप्रियता को टक्कर देते हुए अपनी रचनाधर्मिता द्वारा स्वयं को उनके अगल -बगल में खड़ा किया ,उसका नाम जैनेंद्र कुमार है। जैनेंद्र कुमार ने कलम के द्वारा 'ढर्रे का साहित्य'न रचतेहुए अपनी मौलिक सूझबूझऔर स्वल्प कथासूत्रता से प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद जैसे लोकप्रियव स्थापित कथाकारों के मध्यएक नितांत नवीन राह बनाईतथा तत्कालीन समाज को न सिर्फ झकझोरा, बल्कि खुद को भी मजबूती के साथ स्थापित किया और ऐसी मजबूती से स्थापित किया कि उनका कथा-साहित्य वर्तमान दौर में भी प्रेमचंद, शरदचंद्र के पश्चात् सर्वाधिक चर्चित, प्रसिद्ध और पर्याप्त मांग में रहता है।

जैनेन्द्र कुमार हिंदी के प्रथम ऐसे महत्वपूर्णकथाकार-कहानीकार रहे हैं जो कथानक , भाषा और शिल्प के सदा से चले आ रहे ढांचो को तोड़ने में अपनी सम्पूर्ण रचनाधर्मिता को समर्पित करते चलते हैं। उनकी इस महारत के आगे नतमस्तक हुए बिना नहीं रहा जाता । मानव-मन की विविध मनोवृत्तियों का, ग्रंथियों का, कुंठाओं का जैसा सजीव उद्घाटन-विश्लेषण उनकेकथा-साहित्य, कहानियों में उपलब्ध होता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है । उनका महत्व इसलिए भी है कि वह हिंदी के पहले ऐसे कथाकार ,कहानीकार सिद्ध होते हैंजिनके समस्त कथा-साहित्य और कहानियों में मनुष्य के मनोजगत्का,अन्तर्मन का, व्यक्तिवादी चेतना का बड़ा ही सजीव,साकार और बेबाक चित्र पेश किया गया है।

जैनेंद्र कुमार व्यष्टि -विमर्श के,व्यष्टि-बोध के, व्यक्तिगत चेतना के प्रमुख चिंतक रचनाकार,कथाकार और कहानीकार के रूप में खूब ख्यात-विख्यातहैं ।जैनेंद्र कुमार 'व्यक्ति' को मात्र 'व्यक्ति' के रूप में ही समझने- स्वीकारने का प्रयास करते हैं। यह 'व्यक्ति'न तो देवता है और न ही एक दानव । वह केवल और केवल 'व्यक्ति'है—हाड-मांस का जीता -जागता एक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ममरधर्मा इंसान , जिसमें राग-विराग,ईर्ष्या-द्वेष,वासना-विलास, करुणा -सहानुभूति,हंसी-रुदन आदि मानवीय भावनाओं का होना नितांत स्वाभाविक है। उनके अनुसार साहित्यकारस जिंदगी के रस से अलग नहीं है।साहित्य रचनाकार की अनुभूति और निजता से ही शक्ति-लाभपाता है और इस तरह अपने को व्यक्त कर रचनाकार को भी व्यक्तित्व -लाभ प्रदान करता है।क्योंकि लेखक की निजता ही कला में प्राणों का संचार करती है। जगत के ज्यों-के-त्योंरूपांकन को भी वह कला नहीं मानते।उसमें कलाकार की आंतरिकता , आवेग और वेदना केताप का होना अनिवार्य है।उनके अनुसार, 'अपने लेखन द्वारा नाना चरित्रों की अवतारणाओंमें से, मैंने अपनीनिजता में किन परिस्थितियों का उपभोग किया है, वही प्रथम और प्रमुख बात है।उनका स्पष्ट मत है कि लेखक में जो होता है वही वह दे सकता है जैसे सेब का फल सेबहीदे सकता है अनार नहीं। भावना से अलग धारणा मेंया कि वासना से अलग भावना में उसकी स्थिति नहीं है।समूची मानसिकता में उसको रमाऔरसमाया हुआ होना चाहिए।'[1]

अत: कहानीकार जैनेंद्र कुमार के संपूर्ण साहित्य और विशेषकर कहानियोंको पढ़ने के उपरांत यह निष्कर्ष बड़ी आसानी से निकाला जा सकता है कि उनकी रचनाधर्मिता का एक ही लक्ष्य रहा--' मनुष्य के अंतर में उद्वेलित संवेदनाओं को वाणी देना।' उनके द्वारा प्रतिपादित व्यष्टिवादअथवा व्यक्तिवादीचेतना प्रेमचंदीय समाज का निषेध नहीं करती, बल्कि उसकी महत्ता को स्वीकार करते हुए परोक्षत: समूचे समाज को व्याख्यायित करती आगे बढ़तीहै।कहानीकार जैनेंद्र कुमार नेसामाजिक समस्याओं से अधिक समस्याओं के उत्स को ही उजागर करने की कोशिश की और इस प्रकार आदर्शों की घिसी -पिटी सीमाओं में चलती हुई व्यक्ति-चेतना को जानने का, जगाने का एक नवीन व सार्थक प्रयास किया । पात्रों के चरित्रांकन और मनोविश्लेषण के क्षेत्र में उनके कहानीकार के योगदान का नि:संदेह एक अलग ही महत्व है।उनकीकहानी-शैली नितांत उनकी अपनी है और भाषा सहज एवं अर्थगर्भित किंतु कई जगहों पर दर्शनापूरित वदोहराव से ग्रसित है । यह सच है कि प्रेमचंद की तरह कहानीकार जैनेंद्र कुमार अंत तक अपनी रचनात्मक तेजस्विता को बनाए रखने वाले कथाकार का उदाहरण तो नहीं बन सके, किंतु अपने कहानी-साहित्य के माध्यम से वेजिन प्रश्नों, बातों और समस्याओं से जूझे हैं और जिनके द्वारा उन्होंने व्यक्ति को उसका अक्स दिखलाया -बतलाया है, वह सदैव पाठकों को अपने अंदर झांकने-झकझोरने को मजबूर करेगा, ऐसा निश्चित रूप से कहा जा सकता है और वास्तव में,यही किसी रचनाकार -कहानीकार की रचनाधर्मिता की सबसे बड़ी उपलब्धिहोती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अब हम जैनेंद्र कुमार की कुछ चर्चित कहानियों का मूल्यांकन करेंगे:---

खेल:-यह कहानीकार जैनेंद्र की एकदम शुरुआत की कहानी है जिसे उन्होंने किसी मित्र की हस्तलिखित स्कूली पत्रिका 'ज्योति' हेतु लि था था।इसमें दो मासूम बच्चों के रेत के घरोंदेबनाने के खेल की बड़ी रोचक कथावस्तु है जो अपने लघु कलेवर में मानवीय जीवन केव्यापक सत्य की कहानी बन पड़ी है।पूरी कहानी के अंतर्गत बाल्य -जीवन की इच्छाओं -अभिलाषाओं का रचना-संसार परिव्याप्तहै ।मासूम बच्चों का सहज व मामूली-सा खेल दांपत्य-जीवन के रिहर्सल से लेकर जीवन के नाटक होने के सत्य को ऐसे अनूठे ढंग से अभिव्यंजित करता है कि पाठकों को विचार का आरोपण अलग से अनुभूत नहीं होता ।एक आलोचक के अनुसार:--" 'खेल' कहानी भावुकता के स्थलोंसे भरी कच्ची -उमंगों की भीतर तक छूने वाली घटना का बिंब है ....कहानी का थोड़ा- सा विश्लेषण भी यहसिद्ध करने के लिए काफी है कि उसकी बुनियाद ठोस मनोवैज्ञानिक यथार्थ पर रखी गई है। मनोवैज्ञानिक यथार्थ के यही बीज परवर्ती कहानियों में नए रंग -ढंग से उगते हैं, अतः जैनेंद्र की सृजन- मानसिकता के बीज-बिंदु समझने के लिए'खेल' का ऐतिहासिक महत्व है।फिर इस कहानी में जीवन के प्रकृत-तत्व बहुत हैं---कला का प्रदर्शनकारी चमत्कार नहीं है ।'[2] सुरबाला(सुर्रोरानी) के चारित्र्य द्वारा यहव्यंजित है कि स्त्री में सृजन इच्छा का आदि मआवेगबालपन, बचपन से ही विद्यमान या सक्रिय रहता है जबकि उज्जड़,शठमनोहर रूपी पुरुष विश्व-तत्व की एक भी बात नहीं जानता, उसकी यहउज्जड़ता, यह अनाड़ीपन,शठादिस्त्री की शक्ति से ही संभलती है ।

फांसी:-इसमें मोहन सिंह उर्फ शमशेर और पुलिस अधिकारी की पुत्री जुलैका के प्रेम की रोचक घटना के माध्यमसे व्यष्टि-विमर्श की अभिव्यंजना हुईहै।नायक शमशेर क्रांतिकारी नहीं है किंतु उसका चरित्र क्रांतिकारियों की उदारता व लक्ष्य के प्रति एकांत समर्पण की पद्धति पर गढ़ते हुए कहानीकार ने उसके द्वारा क्रांतिकारियों के निष्ठापूर्ण समर्पण को बतलाया -दिखलाया है।साथही,भारतीय अधिकारी वर्ग की मानसिक गुलामी , शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य और भारतीयदर्शनादि पर लंबी -चौड़ीबहसें भी प्रदर्शित की हैं।कहानी की लंबाई से उसमें बिखराव आया है जो कथा की प्रभावशीलता में कमी लाता है।शमशेर का चरित्र एक ओर यदि जुलैखा के प्रेमके दुर्निवार समर्पण के लिए एक बाध्यता बनता है तो दूसरी ओर उसके राष्ट्रीय संदर्भों की उपेक्षा भी शंकालु नहीं की जा सकती। जुलेका के रूप में एक आवेगपूर्ण अल्हड़ नवयुवती के दर्शन होते हैं जो प्रेमानुभूति और उसकी प्रगाढ़ता में रमी हुई है । पात्रों के मनोभावों और

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संवादों की भाषा आदि कुछ ऐसे मौलिक संकेत पूरी कहानी में दृष्टिगोचर होते हैं जो व्यष्टिवादी जैनेंद्र कुमार की विशिष्ट पहचान है ।

एक कैदी:--यह कहानी कांग्रेस के नेतृत्व में चलने वाले स्वाधीनता आंदोलन में, वर्ग-भेद की भर्त्सदोना की दृष्टि से अपने दौर की एक उल्लेखनीय रचनाबन पड़ीहै।सन् 1930 में गढ़वाल रेजीमेंट के सिपाहियों को पेशावर में निहत्थीजनता पर गोलियां चलाने के लिए दंडित किया गया था।जिस कैदी को केंद्र में रखकर यह लंबी कहानी लिखी गई है उसे इसी अपराध के लिए 10 वर्ष की सजा हुई है। एक साधारण कैदी की मानिंद वह जेल में कैद है।घर दूर होने से उसे मिलने-देखने को भी कोई नहीं आता। जेल में वह उत्पीड़न व बीमारी से पीड़ित है । कहानी-वाचक मैं, जो स्वयं एक कांग्रेसी है ,इसे कैदी का 'दम' कहता है जो इस तरह सब कुछ सहकर भी माफी मांगकर छूटने से साफ इनकार करता है।परंतु एक दूसरा कैदी इसे उसका भी श्रेय देने को तैयार नहीं है।वह अपने साथी 'मैं' की बात काटते हुए कहता है कि :---'उसने माफी मांगकरनछूटने की कसम खाई है और उसे पाप का और बिरादरी का डर है।इस भय का ही दम कह लीजिए।[३]

पाजेब:-इसमें एक छोटी-सी रोचक घटना के सहारे कहानीकार ने बाल -मनोविज्ञान का बड़ा ही सारगर्भित खाका खींचा है।कथानक के नाम पर इसमें अधिक कुछ नहीं है--- पैरों में पहने जाने वाली एक पाजेब के किसी घर में खो जाने सेउसके मिल जाने तक की कहानी है।घर का मुखिया अपने मासूम बच्चे पर ही पाजेब चोरी का संदेह कर लेता है और फिर इस संदेह के प्रति इतना पूर्वाग्रहयुक्त हो जाता है कि वह निर्दोष बालक को भयभीत करकेव पीटकर उससे यह स्वीकार करा लेता है कि पाजेब उसी ने चोरी की है।भयऔर पिटाई के डर से सुबोध-मासूम -निर्दोष बच्चों का अंतर्मन किस तरह काम करता है अथवा उन्हें डराकर,धमकाकर, पीटकर किस तरह आम मध्यवर्गीय परिवारों में जबरदस्ती किसी बातादि के लिए मनवाया जाता है---पूरी 'पाजेब' कहानी में यह देखने लायक चीज है ।अत्यधिक प्रवृत्ति के पिताओं की विभिन्न मन:स्थिति यों के अलावा कहानी बाल -मनोविज्ञान की अनेकानेकपरतों को अत्यंत सरल, सजीव और प्रभावी तरीके से खखोकर रख देती है।प्रसिद्ध कहानीकार विष्णु प्रभाकर के शब्दों में :---"पाजेब की उलझन किसी व्यक्ति विशेष की उलझन नहीं है। वह मात्र परिवार की उलझन भी नहीं है। वह समग्र रूप से समाज विशेष की उलझन भी नहीं है। वह बड़ों और बच्चों की शाश्वत उलझन है।.....'पाजेब' में समय और शाश्वत का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यथार्थ एक रूप हो गया है।समस्या की निरंतरता और लेखक का उससे जूझना ही इस कहानी को सर्वश्रेष्ठ बना गया है।[4]

नीलम देश की राजकन्या :---फेंटेसी के उदाहरण के रूप में प्रचलित जैनेंद्र की श्रेष्ठ कहानियों में से एक 'नीलम देश की राजकन्या' ने अपने प्रकाशन (1934) के साथ ही हिंदी कहानी जगत में तहलका मचा दिया था।इस विचारप्रधान कहानी मेंशिल्पहीन कहानीपन को पहली बार प्रतिष्ठित करके कहानीकार जैनेंद्र कुमार ने अपनी नितांत एक अलग पहचान बना डाली।कहानी में राजकन्या सात समुंदर पार नीलम देश में किन्नरियों से घिरे होने पर भी अपने को बिल्कुल अकेला महसूस करती है।वह लगातार किसी ऐसे राजकुमार की प्रतीक्षा करती रहती है जिसे पाकर वह स्वयं को भूल जाएगी।एक रोजसहसा उसे अपने अंदर किसी राजकुमार के स्पर्श का एहसास होता है और यह अनुभूति उसे इतना अभिभूत कर देती है कि उसे हर तरफ, सब जगह, बाहर-भीतर 'तू है तू है' का एहसास होने लगता है।गोविंद मिश्र के अनुसार—"पूरे का पूरा लोककथात्मकनिर्वाह करते हुए यह कहानी जीवन की मूल समस्या अवसाद और उसके उपचार की है। दोनों ही हमारे भीतर हैं....इस दार्शनिक सत्य को उजागर करती है। अस्तित्ववाद की भी झलक है यहां ... पर सब भारतीय ओढ़ने में और उसी तरह भारतीय सकारात्मकता की तरफ करवट लिए हुए ।सत्यानुभूति के बाद राजकन्या किन्नदियों को वापस भेज सकती थी। नहीं...अनन्तर वह हर प्रकार की क्रीड़ा में मग्न भाव से भाग लेने लगी।[5]

पत्नी:--ऊपरी तौर पर यह कहानी क्रांतिकारियों के विरुद्ध लिखी जान पड़ सकती है।कहानीकार जैनेंद्र कुमार ने स्वयं कहीं स्वीकार किया था कि 'पत्नी' का विचार उन्हेंक्रांतिकारी भगवतीचरण बोहरा से मिला था।उनके जीवन को देखकर, रावी नदी के किनारे एक बम-विस्फोट में उनकी दुखद मृत्यु से उनके मन में यह विचार आया कि क्रांतिकारियों को अपनी मनोरम अभिलाषाओं से मंडित करके जो हम देखते हैं, शायद यथार्थ सत्य नहीं देखते। उसे निरपेक्ष परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो चित्र तब शायद बदला हुआ दिखे। उतना मोहक भी चाहे वह न हो।'पत्नी' उनके इसी विचार का एक प्रयोगात्मक विस्तार है ।कहानी में क्रांतिकारी भगवतीचरण एक व्यक्ति के रूप में नहीं आते,एक क्रांतिकारी के अमूर्त विचार के रूप में आते हैं और सुनंदा भी वास्तविक दुर्गा भाभी नहीं है---वह मध्यवर्गीय परिवार की एक सामान्य नारी है जो क्रांतिकारी पति के निर्माण व संरक्षण में अपनी ओर से पूरी तरह निरपेक्ष बनी या तो अंगूठी की आग की मानिंदतिल-तिलबुझ जाने को अभिशप्त है या फिर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

किवाड़ की ओट में खड़ी होकर उसके आदेश की प्रतीक्षा में इंतजार-रत।देखा जाए तो तत्परता और प्रतीक्षा उसकी जिंदगी के दो छोर हैं, उसे इन्हीं के मध्य जीना है।शहर के एक ओर तिरस्कृत-से मकान की चौके में पति कालिंदीचरण की प्रतीक्षा में बैठी पत्नी सुनंदा अंगीठी की राख होती आगकी तरह ही स्वयं धीरे-धीरे बुझती रही है। पति एक क्रांतिकारी है और पुलिस उसके पीछे है।जब पति को घर आने का अवसर नहीं मिलता है तो देर रात तक असफल प्रतीक्षा के बाद,अंगीठीबुझजाने पर वह स्वयं भी हताश-सीभूखी -प्यासी सो जाती है।कभी ऐसा होता है कि पतिअचानक आते हैं, बहुत जल्दी में, उनके तीन-चार साथी साथ होते हैं जिनके लिए तत्काल भोजन की व्यवस्था का आदेश देकर वेउन्हीं के साथ बहस अथवा तर्क -वितर्क में खो जाते हैं।पति के लक्ष्यों, निष्ठा और विचार -भूमि तकवहस्वयं को उठा नहीं पाती है। उसकी चिंता के केंद्र में केवल और केवल पति है। इस बेपरवाही में कभी उसका मासूम बच्चा जाता रहा था, जिसकी अठखेलियां उसे अबभी स्मरणआती है —"सबसे ज्यादा उसका मरना याद आता है।ओह ! यह मरना क्या है? इस मरने की तरफ उससे देखा नहीं जाता। यद्यपि वह जानती है कि मरना सबको है—उसको मरना है,उसके पति को मरना है पर उस तरफभूल से क्षण भर देखती है तो भयसे भर जाती है। यह उससे सहा नहीं जाता।बच्चे की याद उसे मथउठती है। तब वह विह्वल होकर आंख पोंछती है और हठात इधर -उधर की किसी काम की बात में अपने कोउलझा लेना चाहती है।" [6] कहानीकार जैनेंद्र कुमार ने नायक-नायिका, यानी पति-पत्नी दोनों की मानसिक अवस्था के चित्रों के माध्यम से यह बतलाने -दिखलाने की कोशिश की है कि सृष्टि का प्रत्येक व्यक्ति कम से कम मानसिक धरातल पर दूसरे से खुद को जुदा व अलग अवश्य देखना चाहता है । कहानी की खूबी यह है कि सबसे विनम्र व नम्रता का व्यवहार करने वाला पति अपनी पत्नी पर ही जब-तबक्रोध करता मिलता है।बाहर आतंक का भरपूर विरोध करने वाला पति घर में पत्नी को ही आतंकित किए रहताहै --इसी त्रासदपूर्ण स्थिति को पूरी कहानी बड़े मार्मिक व प्रभावी ढंग से व्यंजित करती है और जैनेंद्र कुमार को एक श्रेष्ठ कहानीकार के रूप में स्थापित भी करती है।

जाह्नवी:--कहानीकार जैनेंद्र की यादगार कहानियों में से एक है-'जाह्नवी'।इसकी सर्वाधिक उल्लेखनीय बात यह है कि इसमें जाह्नवी की मानसिक स्थिति के द्वारा एक सहज मनोवैज्ञानिक सत्य का उद्घाटन हुआ है।अपने ही दायरे में कैद नायिका अपने घर के कोठे पर जाकर 'कागा' को चूरी खिलाना ही अपना एकमात्र नित्यकर्म समझती है।' कागा चुन-चुन खाइयो.....दो नैना मत खाइयो, मत खाइयो--पीऊ मिलन की आस।'--- कहकर वह अपने अज्ञातव भावी प्रियतम का आह्वान किया करती है।और विवाह-संबंध की बात चलने पर होने

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वाले पति से खुल्लम-खुल्ला अपने मनोभावों को अभिव्यक्त किए देती है क्योंकि उसकी नज़र में विवाह दो व्यक्तियों का गठबंधन होता है, जिसमें पुरुष और नारी दोनों को समान अधिकार प्राप्त हैं।इस रूप में, वह खुद को उतना ही स्वतंत्र और आजाद -ख्याल दर्शाती है जितना कि हमारा समाज इस संदर्भ में पुरुष को आजादी देता है।अतः जाह्नवी का सोचने- समझने का एक अलग, स्वतंत्र नजरिया उसके चरित्र को हिंदी कहानी -साहित्य में एक नया व अनूठा आयाम प्रदान करता है ।

एक रात:--यह अविवाहित नवयुवक जयराज केअंतर्द्वंद्व, आत्म-विश्लेषणात्मक संवेग की लंबी कहानी है।एक ओर स्वराज और दूसरी ओर विवाह का द्वंद्व ,समष्टि बनाम व्यष्टि बनकर,दो विचारधाराएं इसमें समानांतर चलती मिलती हैं।लेकिन कहानीकार जैनेंद्र कुमार का व्यष्टि-बोध ही यहां उभरकर सामने आता है जो कि उनकी सर्वप्रमुख प्रवृत्तिहै।

रत्नप्रभा:-इसमें भी व्यक्ति-मन की एक स्वाभाविक सच्चाई को उजागर किया गया है।कहानी की नायिका रत्नप्रभा एक असाधारण सुंदरी है जो प्रसिद्ध सेठ लक्ष्मीनिवास की तीसरी पत्नी है।वह नित्य यमुना-तट पर कंद-पुष्प का एक दोना प्रवाहित करने जाती है और एक रोज एक सुंदर -बलिष्ठ नवयुवकको देख उस पर मोहित हो , उसे अपना नौकर रखकर केवल उसी के साथ पहाड़ों की सैर के लिए निकल पड़ती है ।वहां उसका आश्चर्यान्वितकरने वाला व्यवहार प्रकट होता है, जो व्यक्ति -मन के भीतर बैठने का अवकाश प्रदान करता हुआ जीवन की एक सच्चाई को उजागर करता है।युवती-नारी के हृदय की प्यास पैसों से नहीं बुझ सकती ,उसका अंतर्मनबिल्कुल खाली है ,रिक्त है।ऐसे में किसी सुंदर नवयुवक की ओर उसका आकर्षण या खिंचाव मानवीय-मन की एक सहज, स्वाभाविक कमजोरी ही कहा जाएगा ।नायिका रत्नप्रभा का चारित्र्य विषम वैयक्तिक समस्याओं के जाल में उलझा हुआ है, जिसे दिखाना ही कहानीकार का मुख्य ध्येयरहा है।व्यक्ति-विमर्शकी इसी कड़ीमें अगला नामप्रणयदंश शीर्षककहानी का।है जिसमें सविता नाम की उस आधुनिक, स्वतंत्र नारी की कथाकही गई है जो पेशे से एक डॉक्टर है ।उसकी निगाह में नारी का बिना विवाह किए मां बनना कोई अपराध नहीं है—"उससे आगे भी एक बात है।वह यह कि विवाह आवश्यक है तो हो , लेकिन प्रेम भी क्यों ना हो।उस प्रेम की आवश्यकता स्वयं हमारी आवश्यकता से गहरी है ।प्रश्न है कि उसमेंमानसिक और शारीरिक की रेखा याद रखना क्यों जरूरी है ? यही मैं कहती हूं।[८]

वह क्षण:-यहां आदर्शवादी सामाजिक सिद्धांतों की अपेक्षा व्यक्ति-सत्य की प्रतिष्ठा करते हुए कहानीकार ने इस बात की प्रतिष्ठाकीहै कि देश,समाज,धर्म,जाति,रुपया,ऐश्वर्यऔर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सुविधापूर्ण जीवनादिकेवल सैद्धांतिक बातेंहैं।सिद्धांतों की पूर्ति में लगा हुआ आदमीअपने अंदर कहीं एक घुटन, दमन,कुंठादि महसूसकरता रहता है और अपेक्षाकृत अधिक असहज व कृत्रिम जीवन जीता है।इस परिप्रेक्ष्य मेंकहानी में नायक राजीव का कायाकल्प वस्तुतः कहानीकार जैनेंद्र कुमार के व्यष्टि-विमर्श या बोधका ही परिचायक है।

अंत में, एक आलोचक के मूल्यवान शब्दों में,कि—"फैशन में पड़कर घिसे-घिसाए रास्ते से चलने की बजाए , जंगल में अपने लिए पगडंडी स्वयं बनाना , जो सृजनात्मकता का यह रस और जोखिम उठाना चाहतेहों, उनके लिए हैं जैनेंद्र।[8]

---

[1]साहित्य का श्रेय और प्रेय, जैनेंद्र कुमार, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, पृ.13

[2]सारिका ,जनवरी 1989,पृ.27

[3]जैनेन्द्ररचनावली ,खण्ड़ चार ,पृ.74

[4]सारिका, जनवरी,1989,पृ.13

[5]वही,पृ.71

[6]जैनेन्द्ररचनावली,पृ.419

[7]वही ,पृ.388

[8]सारिका,पृ.89